E-ISSN 2582-5429
SJIF Impact - 5.675

AKSHARA

MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2023 Special Issue 08 Volume IV

The History & Culture of India

Guest Editor

Dr. Pankaj Singh
Assistant Professor, History
Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar
Madhya Pradesh

Dr. M. C. Arya
Assistant Professor, History
Govt. Degree College Doshapani, Nainital
Uttarakhand

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

April 2023 Special Issue 08 Volume IV SJIF Impact- 5.67

Index

Sr.No	*Title of the Paper*	Author's Name	Pg.No
1	Firebrand Freedom Fighter Lakhmi Indira Panda (History of An Odia Azad Hind Fauzee)	**Dr. Chittaranjan Mishra**	**09**
2	Millets an Ingredient of Celebrating Harvest Festivals and Religion in Bharat	**Prof. Suresh Kumar**	**13**
3	Education Scenario in Paramara Era	**Dr. Naveen Gideon**	**18**
4	Ghumusar Resistance : The first Major Challenge to the Colonial Rule in India (1753-1856)	**Capt. Deepak Kumar Nayak**	**23**
5	Traditional art and Entrepreneurship amongst the Gond Women of Central India: An opportunity for Inclusive Development.	**Ms. Shivangi Dwivedi**	**28**
6	Traditional Religion of the Reang (Bru)	**Jonomti Reang**	**32**
7	Temple Architecture of Amarkantak Region	**Dr. Heera Singh Gond**	**38**
8	Changes in Parenting over Time and its Effect on the Child Education	**Shikha Kothari Raturi**	**43**
9	Cultural Contributions of Tehri Riyasat : A Himalayan Princely State of Uttarakhand	**Dr. Dipti** **Dr. Sanjay Kumar**	**48**
10	भारत व दक्षिण पूर्व एशिया के सांस्कृतिक सम्बन्ध : एक अध्ययन	**अतुल कुमार मिश्र**	**53**
11	पैंगबर के रुप में बिरसा मुंडा : एक विश्लेषण	**डॉ. बी.के. श्रीवास्तव**	**58**
12	भारतीय इतिहास, धर्म और लोक परम्पराओं में पीपल वृक्ष की महत्ता	**डॉ. विजय कुमार राय**	**63**
13	एरण के गुप्तकालीन वैष्णव मंदिर एवं मूर्तिशिल्प	**डॉ. नागेश दुबे**	**67**
14	आधुनिक भारत में सम्राट अशोक के विचारों की प्रासंगिकता	**ललित सिंह**	**72**
15	माड़िया जनजाति के जनजीवन में लोककथा का महत्व	**डॉ. बंसो नुरूटी**	**76**
16	भारत के प्रमुख धार्मिक एवं समाज सुधार आंदोलन एवं उसके प्रणेता	**डॉ. कल्पना जोशी**	**80**
17	महात्मा गांधी की धर्म सम्बन्धी अवधारणा	**प्रो. संगीता मिश्रा**	**84**
18	भारतीय लोक धर्म में नागपूजा	**डॉ. अंजली दुबे**	**88**
19	स्वतंत्रता संग्रामी मोदीनगर तहसील के पांच क्रांतिकारी गांव : एक अध्ययन	**डॉ. उमेश त्यागी**	**93**
20	ब्रिटिश कालीन भारत में रेलवे का विकास और जवाहरलाल नेहरू के विचार	**डॉ. अखिल कुमार गुप्ता**	**98**
21	भारतीय राष्ट्रीयता के विकास में समाचार पत्रों की भूमिका	**डॉ. सीमा पाल**	**103**
22	राष्ट्रीय चेतना के उत्कर्ष में पत्र–पत्रिकाओं का योगदान : एक अध्ययन	**डॉ. कंचन वर्मा**	**107**
23	समकालीन भारत में सामाजिक तथा सांस्कृतिक मुद्दे	**डॉ. रेनू राधा**	**112**
24	बुन्देलखण्ड का सांस्कृतिक विरासत स्थलः ओरछा	**कन्हैया यादव** **डॉ. राजेश कुमार अग्रवाल**	**115**
25	बुंदेलखण्ड में विधवाओं की सामाजिक दशा : एक अध्ययन	**स्वाति सोनी**	**120**

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

April 2023 Special Issue 08 Volume IV SJIF Impact- 5.67

13

एरण के गुप्तकालीन वैष्णव मंदिर एवं मूर्तिशिल्प

डॉ. नागेश दुबे
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, मध्य प्रदेश।

सार संक्षेप :

एरण, मध्यप्रदेश के सागर जिला की बीना तहसील में सागर नगर से 77 कि.मी. उत्तर–पश्चिम दिशा में पर स्थित है।[1] एरण तक जाने के लिए चार मार्ग हैं। पहला मार्ग खुरई होकर जाता है। सागर–बीना सड़क मार्ग से पर खुरई से 4 कि.मी. की दूरी पर निर्तला नामक ग्राम से एरण तक 16 कि.मी. पक्की सड़क है। जो सिलगाँव, लेटवास, धंसरा, जाऊखेड़ी ग्राम होकर जाती है। दूसरा मार्ग बीना–भोपाल रेलमार्ग पर स्थित मण्डी बामोरा रेलवे स्टेशन से जाता है। रेलवे स्टेशन से एरण तक 12 कि.मी. की पक्की सड़क है। जो गौहरधंसरा, जाऊखेड़ी ग्रामों से होकर जाती है। तीसरा मार्ग तहसील मुख्यालय बीना से नौगाँव, मेऊली, कोरजा, सतौरिया ग्रामों से होकर जाता है। सतौरिया ग्राम तक 8 कि. मी. की पक्की सड़क हैं। सतौरिया से बीना नदी तक एक किलोमीटर कच्चा मार्ग है। इसके बाद बीना नदी को नाव द्वारा पार करके एरणपुरा स्थल तक पहुँचा जा सकता है। चौथा मार्ग बीना से कुरवाई बरुअल, शेकपुर होते हुए एरण तक 29 किलोमीटर का पक्का सड़क मार्ग है।[2] मध्यप्रदेश के अनेक नगरों में सांस्कृतिक विकास हुआ। इन नगरों में एरण बुन्देलखण्ड का प्राचीनतम सामरिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र रहा है।[3] एरण का महत्व अपने कला वैभव के कारण विशिष्ट है। एरण एक ऐसा केन्द्र है, जो अनेक काल खण्डों में सांस्कृतिक प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता रहा है।

बीजशब्द: एरण, सांस्कृतिक, सामरिक, वैभव, स्तम्भ, प्राचीनतम।

विषय प्रवेश :

मानवीय जीवन की निंरतर विकासशील धारा की दृष्टि से इस प्राचीन स्थल का अध्ययन भारतीय संस्कृति का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत करता हैं।[4] डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के पुरातत्त्व विभाग द्वारा जो उत्खनन कार्य व सर्वेक्षण किये गये। जिनके परिणामस्वरूप एरण तथा समीपवर्ती स्थलों से प्रागैतिहासिक, आद्यैतिहासिक तथा ऐतिहासिक युग के अत्यंत महत्वपूर्ण अवशेषों की प्राप्ति हुई है। जिनसे एरण का महत्व स्पष्ट होता है। एरण से समुद्रगुप्त का अभिलेख[5], बुद्धगुप्त का अभिलेख[6], भानुगुप्त का अभिलेख[7], श्रीधरवर्मा का अभिलेख[8], हूण शासक तोरमाण का अभिलेख[9] प्राचीनकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल के सती स्तम्भ लेखों से एरण का महत्व उदघाटित हुआ है।[10] गुप्तकाल में समुद्रगुप्त ने इसे अपना आमोद–प्रमोद (स्वभोग) का नगर बनाया और कुछ समय समुद्रगुप्त अपनी पत्नि, पुत्र, पौत्रों सहित एरण में रहा। इस समय एरण का विकास चरमोत्कर्ष पर था।[11] एरण को सागर जिले का प्राचीनतम ऐतिहासिक नगर होने का गौरव भी प्राप्त है। यह प्राचीन काल के प्रमुख राजमार्गों से जुड़ा था। एरण से एक राजमार्ग विदिशा होकर उज्जयिनी तथा दूसरा राजमार्ग एरण से कौशाम्बी होता हुआ वाराणसी जाता था।[12] राजपथ पर स्थित होने से इस स्थल का अपना विशेष महत्व था। प्रो. कृष्णदत्त वाजपेयी के अनुसार भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विकास में मध्यप्रदेश का विशेष महत्व है। इस प्रदेश के अनेक पुरास्थलों के उत्खननों से प्राप्त सामग्री से ज्ञात होता है, कि यहाँ पर धर्म, आध्यात्म, साहित्य, कला और ललितकला का सम्यक विकास हुआ। भारतीय कला के इतिहास में मध्यप्रदेश के सागर जनपद में एरण का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।[13] मध्यप्रदेश के सागर जिले की वर्तमान बीना तहसील के अंतर्गत एरणग्राम (प्राचीन ऐरिकिण) आज भले ही एक सामान्य ग्राम हो किन्तु प्राचीनकाल में इसे भारत का एक विशिष्ट सामरिक एवं सांस्कृतिक स्थल होने का गौरव प्राप्त था।

एरण में प्रथम शती ईरवी से लेकर छठी शती ईरवी तथा पूर्व मध्यकाल, उत्तर मध्यकाल में मूर्ति निर्माण परंपरा का क्रमशः विकसित रूप परिलक्षित होता है। एरण में वैष्णव, शैव, शाक्त, सौर, गाणपात्य एवं बौद्ध धर्म की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। गुप्तकाल में एरण वैष्णव मत के एक महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में विकसित हुआ। वैष्णवधर्म के मानने वाले कला मर्मज्ञ गुप्त सम्राटों के संरक्षण में यहाँ पर अनेक वैष्णव मंदिरों का निर्माण हुआ। उनमें भगवान विष्णु तथा उनके अवतारों की प्रतिमाएँ शैव, बौद्ध धर्म से संबंधित

प्रतिमाएँ जैन प्रतिमाओं का भी निर्माण गुप्तकाल में किया गया।[14] गुप्तकाल में निर्मित मंदिरों का प्रारंभिक रूप एरण में मिलता है। छोटे व सपाट गर्भ गृह, पूजा स्थल, देव प्रतिमा युक्त मंदिर भारत के प्रारंभिक गुप्तकालीन मंदिरों की विशेषताएँ मानी जाती हैं।[15]

एरण में बीना नदी के दक्षिणी तट पर एरण के मुख्य सांस्कृतिक भग्नावशेष विद्यमान हैं। एरण के ये मंदिर समूह विष्णु व उनके अवतारों से संबंधित हैं। महाविष्णु मंदिर के अलावा इस स्थल पर महावराह मंदिर एवं नृसिंह मंदिर भी हैं। ये गुप्तकालीन तथा हूण काल के प्रारंभिक काल में निर्मित मंदिर साधारण ढंग से निर्मित किये गये थे। इनमें सपाट छत वाला गर्भगृह एवं चार पाषाण स्तंभों पर आधारित लघु मंडप है। एरण के मंदिर समूह को मंदिर–वास्तु का प्राचीनतम रूप माना जा सकता है। विद्वानों का मत है, कि एरण में विष्णु, नृसिंह और वराह मंदिर स्थापित किये गये थे। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि एरण में उक्त तीन मंदिरों के समीप ही चौथा मंदिर भी गुप्तकाल में निर्मित किया गया था। डॉ. हरीसिंह गौर पुरातत्व संग्रहालय में सुरक्षित महेश्वरदत्त व वराहदत्त द्वारा निर्मित नृवराह की प्रतिमा संभवतः इसी चौथे मंदिर में स्थापित थी। एरण में मंदिरों के छतें सपाट थीं। आयताकार गर्भगृह में स्थापित देवमूर्ति के साथ समक्ष थोड़ा नीचा द्वार मंडप है। द्वार व स्तंभों को भाँति–भाँति रूप से अलंकृत किया गया है।[16] मंदिर समूह के समीप ही केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा एक चबूतरे के ऊपर चार स्तंभ सुरक्षा की दृष्टि से खड़े किये गये हैं। इस चबूतरे पर कृष्णलीला से संबंधित आकृतियाँ वाले शिला फलक लगे हैं। विष्णुमंदिर के सामने बुध गुप्त द्वारा स्थापित गरुड़ स्तंभ सादगी पूर्णकला का जीता जागता प्रमाण है।[17]

एरण से गुप्तकालीन अनेक मंदिर व मूर्तियों के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। एरण से दूसरी–तीसरी ईस्वी के शिवलिंग व नाग प्रतिमाएँ प्राप्त हुई है। इससे स्पष्ट होता है कि एरण पर नाग शासकों का प्रभुत्व, गुप्तों के पूर्व था। नाग शासकों के सिक्के भी इसकी पुष्टि करते हैं। शक शासकों के शिलालेख, सिक्के व साँचे ढालने के साचों से स्पष्ट होता है कि एरण पर शकों का भी अधिकार था। एरण में तीसरी शती ईस्वी से लेकर छठी शती ईस्वी तक वैष्णव मूर्ति निर्माण परंपरा का क्रमशः विकसित रूप परिलक्षित होता है। वैष्णव मूर्तियों की शिल्प परम्परा में अनेक नवीन प्रतिमान एरण की गुप्त कालीन कला में प्राप्त हुए है। एरण में वैष्णव धर्म की अनेक मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। एरण में भगवान विष्णु के अवतारों की प्रतिमाओं का निर्माण मुख्य रुप से किया गया था।[18] एरण गुप्तकाल में वैष्णव मत के महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित हो गया था। गुप्त शासक के संरक्षण में यहाँ पर विशाल विष्णु मंदिरों का निर्माण किया गया था। गुप्त काल में महाराजाधिराज समुद्रगुप्त ने इसे अपना **'स्वभोगनगर'** बनाया, इसकी जानकारी हमें एरण से प्राप्त समुद्रगुप्त के अभिलेख से मिलती है।[19] गुप्तकाल में एरण का विकास चर्मोत्कर्ष पर था। यहाँ गुप्तकालीन विष्णु मन्दिर नृसिंह मन्दिर, वराह मन्दिर बनवाये गये जो आज भी दृष्टिगोचर होते है। एरण में गुप्तकालीन मंदिर परिसर में महाविष्णु प्रतिमा, विष्णु मंदिर के गर्भगृह में प्रतिष्ठित है। इस महाविष्णु मंदिर का निर्माण समुद्रगुप्त ने करवाया था। महाविष्णु मंदिर आयताकार है। इस मंदिर का बाहरी आकार 9.75 मीटर लंबा तथा 3.90 मीटर चौड़ा है। इसका गर्भगृह 5.40 मीटर लंबा एवं 1.80 मीटर चौड़ा है। कनिंघम ने लगभग 1875 ईस्वी में जब इस मंदिर को देखा था, तब मंदिर की छत गिर चुकी थी। एरण के विष्णु मंदिर में एक विकसित योजना के दर्शन होते हैं। गर्भगृह के मध्य स्थल पर भगवान विष्णु की विशाल चतुर्भुजी स्थानक प्रतिमा प्रतिष्ठित है। यह प्रतिमा एक चौकी पर अवस्थित है। मूर्ति की ऊँचाई 13 फुट 2 इंच है। मूर्ति का मुख आंशिक रूप से खंडित है। इस प्रतिमा में विष्णु को समभंग–मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। निचला बाँया हाथ कट्यावलम्बित है, शेष हाथ लगभग खंडित है। दो भुजाएँ कूल्हों पर अवलम्बित है। प्रतिमा के दाहिनी ओर गदा बने होने का अवशेष है। परंतु विष्णु का एक भी हाथ गदा से स्पर्श करते हुए प्रदर्शित नहीं किया गया है। हाथों में पकड़े हुए अस्त्र टूट चुके हैं। किन्तु उनके हत्थे अभी भी विद्यमान हैं। जिनसे ही अस्त्रों की पहचान हो सकी है। प्रतिमा की भुजाओं के भुजबंध व हाथों में कड़े दिखलाये गये हैं। महाविष्णु की इस प्रतिमा की किरीट मुकुट का उत्कृष्ट रूप से अंकन हुआ है। इस पर सिंह मुख बना है। भगवान कण्ठहार धारण किए हुए हैं। पवित्र वैजयंतीमाला उनके गले में सुशोभित है। कानों में कर्णकुण्डल, अग्रवाम हस्त की कनिष्ठा अंगुली अलंकृत छल्ला (मुद्रिका), अंगद, कंकण, कटिमेखला, धोती और पाद वलय से सुशोभित देवता के मस्तक के पीछे विशाल प्रभा मण्डल है। कण्ठहार के मध्य में दीर्घ वनमाला और मुकुट का अलंकरण दर्शनीय है।[20]

प्रतिमा सादगी पूर्ण है। अलंकरण बहुत कम है। महाविष्णु प्रतिमा के नेत्र योगियों की भाँति अर्धोन्मीलित है। भगवान विष्णु जो धोती धारण किए है, सामने से उसका ग्रंथि बंधन (गाँठ) सुस्पष्टता से

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2023 Special Issue 08 Volume IV SJIF Impact- 5.67

दिखलायी पड़ता है। पृष्ठ भाग में भी धोती चुन्नटें उत्कीर्ण की गई हैं। पृष्ठ भाग में ही ग्रेवेयक–बंधन को सुन्दर तरीके से बाँधा गया है। रेखांकन के माध्यम से धोती का अंकन है। मेखला के नीचे बंधे कटिपट्ट के दोनों छोर बाँयी जंघा की ओर लटकते हुए अंकित हैं। वैजयंतीमाला धारण किये हुए यह मूर्ति तेज बल व पराक्रम को प्रदर्शित करती है। तथा भव्य रूप का दर्शन कराती है यह प्रतिमा एक ही विशाल पाषाण खण्ड को काटकर बनायी गयी हैं। इसकी चौकी मूल प्रतिमा के साथ निर्मित है। शंख, चक्र, गदा के अतिरिक्त देव अभय मुद्रा में कमल लिए हुए निर्मित किये गये हैं। कनिंघम ने इस प्रतिमा के समीप 'इष्टहरग्रही लेख अंकित पाया। लिपि के आधार पर यह प्रतिमा चौथी शती ईस्वी की है। मंदिर की बनावट के आधार पर अधिकांश विद्वानों ने इसका निर्माणकाल लगभग 400 ईस्वी के मध्य माना है।[21]

शेषशायी विष्णु प्रतिमाएँ :

एरण में शेषशायी विष्णु की मूर्तियों को तीन शिलापट्टों पर उकेरा गया है। यह प्रतिमाएँ गुप्तकाल में निर्मित हैं। पुराणों, आगमों तथ शिल्प शास्त्रों में शेषशायी विष्णु को अनंत शायीनारायण, जलशायी नारायण और पद्मनाभ के नाम से पुकारा गया है। यह विष्णु का असाधारण एवं विशिष्ट रूप है। विष्णु धर्मोत्तर में विष्णु के शेषशायी रूप को पद्मनाभ कहा गया है। जल के मध्य स्थित शेषनाग का सिर, फैले हुए फणों में विद्यमान मणि तथा रत्नों की प्रभा से आलोकित रहता है। शेषनाग के शरीर की बनी हुई शैय्या पर चार भुजा वाले पद्मनाभ को शयन–मुद्रा में दर्शाया जाता है। महाभारत में शेषशायी–विष्णु की मूर्ति का निर्माण का उल्लेख मिलता है। इसके अलावा विष्णु धर्मोत्तर, पद्मपुराण, भागवतपुराण, रघुवंश तथा वैशानसागम में भी शेषशायी विष्णु की मूर्ति निर्माण से संबंधित विवरण दिये गये हैं।[22] एरण में गुप्तकालीन मंदिर समूह के निकट ही केन्द्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा निर्मित चबूतरे पर लगे शिलापट्टों में से एक शिलापट्ट पर शेषशायी विष्णु को प्रदर्शित किया गया है। इस प्रतिमा में भगवान विष्णु को शेषनाग की शैय्या जो कुण्डिलयों के रूप में दृष्टव्य हैं। उन पर शयन–मुद्रा दर्शाया गया है। उनके सिर पर शेषनाग के सातफण छत्र के समान फैले हुए हैं। विष्णु बाँये हाथ में चक्र और दाहिने में गदा लिए हुए हैं। किरीट मुकुट, एकावली, कर्ण कुण्डल, दीर्घ वनमाला इत्यादि से सुशोभित देवता की नाभि से उद्भूत कमल पर ब्रह्मा को बैठे प्रदर्शित किया गया है। यह प्रतिमा विष्णु धर्मोत्तरपुराण के निर्देशानुसार निर्मित है। ब्रह्मा की आकृति खण्डित है। विष्णु के पैरों के पास लक्ष्मी देवी को उनके पैर दबाते हुए प्रदर्शित किया गया है। उनके पीछे अंजुलि मुद्रा में एक नर व एक नारी बैठे हुए दिखाये गये हैं।

एरण में शेषशायी विष्णु की दूसरी प्रतिमा विष्णु मंदिर के समीप सुरक्षित है। परवर्ती गुप्तकाल में निर्मित यह मूर्ति खण्डित हैं। शेषनाग पर वनमालाधारी, विविध अलंकरणों से विभूषित विष्णु शयन–मुद्रा में निर्मित हैं। विष्णु के सिरोभाग के ऊपर शेषनाग का सप्तमुखी फण छत्र के रूप में शोभायमान हैं। कमर के नीचे से यह मूर्ति खण्डित हो चुकी है। शेष की कुण्डलियों पर शयन मुद्रा में विष्णु को द्विभुजी रूप में निर्मित किया गया है। दोनों हाथों के अग्रभाग कलाइयों के पास से खण्डित हैं। देवता का मुख भी खण्डित हैं। विष्णु के शरीर पर अलंकरण के रूप में वनमाला, अंगद, कंकण, जनेऊ और कटिमेखला दृष्टव्य हैं। पाषाण चौकी के पायों के निकट तीन मानव मूर्तियाँ बैठी हुई मुद्रा में निर्मित हैं। तीनों मानव मूर्तियाँ अस्पष्ट सी हैं। इस प्रतिमा का निर्माण काल छटवीं शताब्दी ईस्वी के लगभग माना जा सकता है।[23] पीछे सपक्ष गरुड़ की मूर्ति वीरासन–मुद्रा में अंकित हैं। मानवाकार गरुड़ की इस लघुमूर्ति का गले के ऊपर का भाग तथा दोनों हाथ खण्डित हो चुके हैं।

गरुड़ासीन विष्णु प्रतिमा :

एरण पुरास्थल से एक गरुड़ासीन विष्णु की प्रतिमा प्राप्त हुई है।[24] यह प्रतिमा विष्णु मंदिर के गर्भगृह के प्रवेश द्वार के सिरदल के ललाट बिम्ब पर गरुड़ासीन चतुर्भुजी विष्णु की आकृति बनी है। आकृति में गरुड़ के फैले पंखों के बीच में विष्णु बैठे हुए हैं। उनकी चार भुजाएँ हैं। दोनों दाहिने हाथों में क्रमशः चक्र और गदा है। बाँयें हाथों में शंख तथा कमल है। पक्षीराज गरुड़ विष्णु का वाहन है। विष्णु के गरुड़ासीन रूप का वर्णन अनेक ग्रंथों मिलता है।[25]

वराह मंदिर एवं महावराह प्रतिमाः

महावराह की यह विशालमूर्ति एरण में स्थित वराह–मंदिर में स्थापित है। एरण स्थित यह भग्न मंदिर हूण शासक तोरमाण के प्रथम राज्य वर्ष का है। महाविष्णु मंदिर के दक्षिण में यह वराह मंदिर निर्मित था। एरण के प्राचीन मंदिरों में वराह मंदिर विशेष महत्व रखता है। यह मंदिर लगभग 485–500 ईस्वी के मध्य निर्मित किया गया था। कनिंघम ने जिस समय यह मंदिर देखा था, उस समय ही (1875 ई. में) यह

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

SJIF Impact- 5.67

April 2023 Special Issue 08 Volume IV

ध्वस्त रूप में था। परंतु महावराह की प्रचण्ड प्रतिमा सुरक्षित थी। इस मंदिर का निर्माण तोरमाण की सम्प्रभुता स्वीकार करने वाले धन्यविष्णु द्वारा कराया गया था। प्रतिमा में वक्षस्थल पर तोरमाण के शासन काल का अभिलेख है। इस अभिलेख की खोज 1838 ईस्वी में कैप्टन टी. एस. बर्ट द्वारा की गयी थीं। वराह की यह मूर्ति गुप्तकालीन मूर्तिकला का उत्कृष्ट उदाहरण मानी जाती है। यह एक विशाल प्रतिमा है। पशु रूपी महावराह की मूर्ति को बड़े प्रभावशाली रूप में निर्मित किया गया है। यह मूर्ति एरण गाँव के पश्चिम में एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित मंदिर समूहों के दक्षिणी किनारे के पूर्वा भिमुख अवस्था में प्राप्त है।

महावराह की विशाल मूर्ति एक ही पत्थर को काटकर निर्मित की गयी हैं। इस प्रतिमा की लंबाई 13 फुट 2 इंच (4.19 मीटर), ऊँचाई 11 फुट 2 इंच (3.32 मीटर) तथा चौड़ाई 5 फुट $1^{1/2}$ इंच (1.53 मीटर) है।[26] महावराह की विशालकाय मूर्ति के संपूर्ण शरीर में ऋषियों और देवताओं की आकृतियों को उकेरा गया है। मूर्ति पर कमण्डल लिए हुए अनेक वस्त्रधारी ऋषियों का अंकन बहुत ही कलात्मक व सौन्दर्य पूर्ण ढंग से किया गया है। ऋषियों व देवताओं के अंकन होने से इस प्रतिमा को यज्ञ वराह भी कहा गया हैं। महावराह के गले में एक भारी हार पड़ा है। इस पर अनेक तरह के अलंकरण उकेरे गये हैं। इन अलंकरणों के साथ कन्या, मत्स्य आदि राशियों को उत्कीर्ण किया गया है। राशियों के मध्य मालाधारी स्त्री–पुरूष की आकृति उत्कीर्ण किया गया है। महावराह के कानों के समीप मालाधारी विद्याधरों की लघु आकृतियाँ दिखाई पड़ती हैं। महावराह के संपूर्ण शरीर पर पंक्तिबद्ध बालखिल्य ऋषिगण बने हैं। कुछ ऋषि दाढ़ी युक्त अंकित किए गए हैं। तो कुछ की दाढ़ी नहीं है। प्रदर्शित भाव–विन्यास से ये सभी योगी दर्शित होते हैं। सभी अभय मुद्रा में उकेरे गये हैं।[27] महावराह की दाढ़ से लटकी हुई नारी–रूप में पृथ्वी प्रलय की पौराणिक कथा का प्रतीक है। द्विभुजी भू–देवी (पृथ्वी) बाँये हाथ से वराह की दाढ़ पकड़े हुए हैं। भू–देवी की आकृति का दाहिना हाथ जंघा के समीप झूलता हुआ दिखलाई पड़ता है। कुण्डल, हार, भुजबंध, चोली, कटिमेखला और चूड़ियों से सुशोभित भूदृदेवी की जाँघों के नीचे का भाग भग्नावस्था में है।

महावराह के दाहिनी ओर ब्रह्मा कमण्डलु व माला लिए दर्शित हैं। महावराह के बांयी ओर शंकर भगवान योगी के रूप में दिखलाये गये हैं। महावराह को नाग से आबद्ध किया गया हैं। नाग कुण्डलियाँ महावराह के नीचे दिखाई पड़तीं हैं। वराह भगवान के निकट ही मनुष्य रूप में नाग–गण भग्न रूप में विद्यमान हैं। महावराह के कंधों पर चतुर्भुजी पार्श्वोंवाला एक छोटा सा देवालय है। जिसके हर भाग में उसी के सृदश्य बैठीं हुई आकृतियाँ हैं। इस प्रचण्ड प्रतिमा पर ऋषि, देवराशियाँ, ब्रह्मा, शिव, नाग विद्याधर की आकृतियाँ यह प्रदर्शित करती हैं कि महावराह, समस्त शक्तियों से पूर्ण पृथ्वी की रक्षा हेतु अवतरित हुए थे। विष्णु के कृष्णावतार की कथा भागवत, विष्णु, हरिवंश आदि पुराणों में वर्णित की गयी है। जन्म तथा बाल्यावस्था से अंत तक जितनी भी लीलाएँ भगवान ने की उन सबका विवेचन वैष्णव पुराणों में हुआ है। भागवत पुराण तो कृष्णचरित्र का हीवर्णनविस्तृत रूप से करता है। कृष्णविष्णु के अवतारथे। कृष्णावतार से संबंधित कुछ दृश्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। जैसे जन्म के समय बालक रूप, वसुदेव द्वारा उन्हें कारागार से ले जाने व यमुना पार कर यशोदा तक पहुँचाने, कृष्ण द्वारा अनेक राक्षसों का वध किये जाने की लीलाएँ बालक कृष्ण से संबंधित हैं। कालिया मर्दन का दृश्य बड़ी भव्यता से प्रदर्शित हुआ है। यह रूप नाग सम्प्रदाय और कृष्ण सम्प्रदाय की प्रतिद्वदिंता का प्रतीक है। प्राचीन काल में नागपूजा का अधिक प्रचलन था। कालांतर में कृष्ण सम्प्रदाय को रूप से प्रभावी दर्शाने के लिए, कृष्ण का कालिया मर्दन प्रतिमा का विवरण प्रस्तुत किया है।[28] एरण के गुप्तकालीन मंदिर समूह स्थल में सुरक्षित गुप्तकालीन शिलापट्टों पर मूर्तिकारों ने अनेक पौराणिक दृश्य अंकित किये हैं। कृष्ण जन्म तथा अन्य लीलाओं से संबंधित दृश्य रोचक तथा सुंदर हैं। केन्द्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा निर्मित चबूतरे के आधार में लगे शिलापट्टों पर कृष्ण लीला से संबंधित विभिन्न दृश्य दृष्टव्य हैं। कृष्ण लीला को प्रदर्शित करने वाले शिलापट्टों का एरण में प्राप्त होना गुप्तकाल में भागवत सम्प्रदाय की लोकप्रियता का सूचक है। गरुड गुप्त सम्राटों का राज्य चिन्ह था। एरण में स्थापित गरुड़ ध्वज स्तंभ के शीर्ष पर निर्मित मानवाकार गरुड़ की मूर्ति के साथ नागों का अंकन है। दो अग्र भागों वाली यह मूर्ति अपने हाथों में नाग पकड़े हुए हैं। इस मूर्ति में गरुड़ द्वारा नागों को पकड़े जाने से आशय निकलता है, कि नाग गरुड़ से काफी भयभीत रहते हैं। नाग गरुड का भोजन है। एरण में नागों को दलन रूप में मूर्तिबद्ध किये जाने का एक आशय यह भी निकलता है, कि एरण में वैष्णव धर्म पालन करने वाले गुप्त शासकों से पहले नागवंशी शासकों का आधिपत्य था। नागों को पराजित

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
AMRJ
April 2023 Special Issue 08 Volume IV SJIF Impact- 5.67

कर गुप्तों ने वैष्णव धर्म का प्रचार–प्रसार इस क्षेत्र में किया। नागों को पराजित करने व वैष्णव धर्म का प्रभाव उन पर स्थापित होने को वैष्णव धर्म को देवमूर्तियों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। वैष्णव संस्कृति की नाग संस्कृति पर विजय को प्रदर्शित किया गया है। एरण गुप्तकालीन पुरास्थल पर गरुड स्तंभ अपने मूल स्थान पर आज भी खड़ा हुआ हैं। यह गरुड़ ध्वज स्तंभ कुल 48 फुट ऊँचा है। गुप्त सम्राट बुधगुप्त के सामंत मातृ विष्णु तथा धन्यविष्णु द्वारा स्थापित यह गरुड़ स्तंभ सादगीपूर्ण उत्कृष्ट कला का प्रमाण है। स्तंभ नीचे चौपहलू किंतु 6.1 मीटर की ऊँचाई के बाद 2.60 मीटर तक अठपहलू है। जिसके ऊपर शीर्ष भाग है। शीर्ष भाग के निचल भाग में घंटाकार अधोमुखी कमल की आकृति है। कमल के ऊपर निर्मित फलक के ऊपरी भाग पर एक दूसरे से पीठ सटाये सिंह बैठे निर्मित किये गये हैं। जिनके ऊपर गरुड़ की 1.70 मीटर ऊँची मानवकार प्रतिमा खड़ी हुई अवस्था में स्थापित है। गरुड़ की मानवाकृतियों के पृष्ठ भागों को संलग्न रूप से प्रदर्शित करने के कारण पृष्ठ भागों को संयुक्त कर दिया गया है। जिसके फलस्वरूप गरुड़ की इस मानवकार प्रतिमा के अग्रभाग ही दिखलाई पड़ते हैं। गरुड़ की द्विभुजी आकृतियों के हाथों में नाग को पकड़े हुए प्रदर्शित किया गया है।[29]

निष्कर्ष : गुप्तकालीन कला के अनुपम उदाहरण एरण से मिले हैं। एरण से विष्णु की प्रतिमा, महावराह (पशुवराह) की प्रतिमा, गरुड़ स्तम्भ भारतीय कला में अपना विशिष्ठ स्थान रखते हैं। बुन्देलखण्ड के प्राचीनतम धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामरिक केन्द्र एरण का भारतीय पुरातत्त्व व संस्कृति में विशिष्ट योगदान है। एरण गुप्तकालीन प्रतिमाओं की विशालताओं व प्राचीनता की दृष्टि से मध्यप्रदेश में साँची के पश्चात ऐतिहासिक पुरातात्विक महत्व के आधार पर पर्यटकों को भारतीय संस्कृति को प्रदर्शित करने वाला दूसरा महत्वपूर्ण पुरास्थल माना जा सकता है।

संदर्भ :

1. दुबे, नागेशः एरण की कला, सागर 1997, पृ.3
2. चढ़ार, मोहन, लालः एरण एक सांस्कृतिक धरोहर, आयु पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 13–14
3. दुबे, नागेश, पूर्वोवत (1997) पृ.3
4. वही
5. का. ई. इ. जिल्द–3, पृ.158
6. कनिंघम, अलेक्जेण्डरः पूर्वोक्त, पृ.89
7. मोहन, लालः एरण की ताम्र पाषाण संस्कृति, कृष्णा कम्यूटर एण्ड ऑफसेट, सागर, मध्यप्रदेश, पृ.19
8. वही, पृ.14
9. वाजपेयी, संतोष कुमारः भारतीय ऐतिहासिक सिक्के, 1997, दिल्ली, पृ.111
10. वाजपेयी, के. डीः भारतीय संस्कृति में मध्यप्रदेश का योगदान, 1967, इलाहाबाद, 1964, पृ.41
11. द्विवेदी, चन्द्रलेखा, एरण का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, दिल्ली, 1984, पृ.3
12. वाजपेयी, के. डीः भारतीय संस्कृति में मध्यप्रदेश का योगदान, 1967, इलाहाबाद, पृ. 41 1964
13. द्विवेदी, चन्द्रलेखा, एरण का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, दिल्ली, 1984, पृ.5
14. दुबे, नागेशः एरण की कला, सागर 1997, पृ.96
15. वही, पृ.96
16. राव, टी. ए. गोपीनाथः एलीमेन्टस ऑफ हिन्दू आइकोनोग्राफी, खण्ड 1, 1968, पृ.138
17. मोहन, लालः एरण की ताम्र पाषाण संस्कृति, सागर 2009, पृ.12
18. राव, टी. ए. गोपीनाथः एलीमेन्टस ऑफ हिन्दू आइकोनोग्राफी, खण्ड 1, 1968, पृ.92–94
19. का. ई. इ. जिल्द–3, पृ.158
20. दुबे, नागेशः एरण की कला, सागर 1997, पृ.108
21. वही, पृ.109
22. विष्णु धर्मोत्तर पुराण, 85, 71
23. दुबे, नागेश एवं मोहनलाल, एरण : एक परिचय, अमर कंटक, 2016, पृ.20–21
24. दुबे, नागेशः एरण की कला, सागर 1997, पृ.104
25. विष्णु धर्मोत्तर पुराण, 85, 81
26. दुबे, नागेश एवं मोहनलाल, एरण : एक परिचय, अमर कंटक, 2016, पृ.23–24
27. दुबे, नागेशः एरण की कला, सागर 1997, पृ.105–106
28. ब्रजभूषण श्रीवास्तवः प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1998, पृ.24